Happy Mother's Day

Jayoti Muhim

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

Title Code : RAJBIL01655 Issue 9, Volume 4. May, 2018

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय के लॉ एंड गवर्नेंस विभाग में हुआ नेशनल कांफ्रेंस "रीसेंट लॉ रिफॉर्म्स एंड कॉर्पोरेट एंड सोशल गवर्नेंस बाए वीमेन, आर.एल.सी.एस –2018" का आयोजन

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय में यूनिवर्सिटी मदर टेरेसा चेयर के तत्वाधान में 'फैकल्टी ऑफ़ का एंड गवर्नेंस तथा वीमेन कमीशन राजस्थान' की संयुक्त सहभागिता में तीन दिवसीय नेशनल कांफ्रेंस एवं अकादमिक अवार्ड सेरेमनी "रीसेंट लॉ रिफॉर्म्स एंड कॉर्पोरेट एंड सोशल गवर्नेंस बाए वीमेन, आर.एल.सी. एस –2018" का आयोजन किया गया। आयोजित इस कांफ्रेंस का उद्देश्य न्यायिक क्षेत्र में महिलाओं से सम्बंधित मुद्दों पर नवीनीकरण व महिला सशक्तिकरण एवं कॉर्पोरेट एवं सामा. जिक क्षेत्र में महिलाओ के प्रतिनिधित्व की वर्तमान स्थिति से अवगत कराना था। इस नेशनल कांफ्रेंस का शुभारम्भ विश्वविद्यालय की चेयरपर्सन माननीया जेवीएन विदुषी गर्ग जी एवं माननीय श्री नवीन जैन जी सेक्रटरी, मेडिकल हेल्थ एंड फॅमिली विल्फ़िर, मिशन डायरेक्टर, एनएचएम (छभ्ड) नेशनल हेल्थ मिशन, गवर्नमेंट ऑफ़ राजस्थान एंड चेयरपर्सन एसएए,पीसीपीएनडीटी गवर्नमेंट ऑफ़ रा. जस्थान, ने द्वीप प्रज्वलन कर किया कांफ्रेंस के मुख्यअतिथि एवं प्रमुख वक्ता के रूप में माननीय श्री नवीन जैन जी सेक्रटरी, मेडिकल हेल्थ एंड फॅमिली विल्फ़िर, मिशन डायरेक्टर, एनएचएम (छभ्ड) नेशनल हेल्थ मिशन, गवर्नमेंट ऑफ़ राजस्थान एंड चेयरपर्सन एसएए,पीसीपीएनडीटी गवर्नमेंट ऑफ़ राजस्थान उपस्थित रहे।

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय के एग्रीकल्चर विभाग में हुई तीन दिवसीय नेशनल कांफ्रेंस " ओ.एफ.बी.ए –2018" का आयोजन

3मई 2018. ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय में गुरूवार को यूनिवर्सिटी लाल बहादुर शास्त्री चेयर के तत्वाधान मे कृषि विज्ञानं केंद्र, आई.सी.ए.आर एवं इंडियन फारमर्स फ़र्टिलाइज़र कोआपरेटिव(आई. एफ.एफ.सी.ओ) के तहत फैकल्टी ऑफ़ एग्रीकल्चर एन्ड वेटेनरी साइंस द्वारा तीन दिवसीय नेशनल कांफ्रेंस एवं अकादमिक अवार्ड सेरेमनी "आर्गेनिक फार्मिंग एन्ड फूड प्रोडक्शन विद बायोटेक्नोलॉजिकल अप्रोचेज़ फॉर सस्टेनेबिलिटी–ओ.एफ.बी.ए –2018" का आयोजन किया गया। इस नेशनल कांफ्रेंस का शुभारम्भ विश्वविद्यालय की चेयरपर्सन माननीया जेवीएन विदुषी गर्ग जी ने द्वीप प्रज्वलन कर किया, एवं छात्राओं के द्वारा वन्देमातरम तथा गणेश वंदना के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। कांफ्रेंस मे प्रमुख वक्ता एवं समीक्षक के रूप में प्रोफेसर डॉ रविंदर कुमार शर्मा उपस्थित रहे। प्रोफेसर रविंदर कुमार शर्मा नेशनल हॉर्टिकल्चर बोर्ड के पूर्व डायरेक्टर रह चुके है।इस कार्यक्रम के पहले सत्र में विश्वविद्यालय परिसर के अलग–अलग तीन कक्षों मे 'प्रीक्वॉलिफिइंग सेशन' का आयोजन हुआ जिसमे डॉ. सुदेश कुमार, प्रोफेसर आर. ए.आर.आई., जयपुर एवं डॉ. एस के. खंडेलवाल, आर. ए.आर.आई., जयपुर तथा डॉ. प्रियंका दादूपंती, विभागाध्यक्ष एग्रीकल्चर, बियानी गर्ल्स कॉलेज जयपुर ने छात्राओं के शोध पत्रों की समीक्षा करते हुए अपने विचार व्यक्त किये। प्रस्तुतीकरण की पहली श्रृंखला में "आर्गेनिक फार्मिंग एंड बायोटेक्नोलॉजीः सिनेरियो ऑफ फूड सिक्योरिटी" थीम पर तथा दूसरे सत्र मे "इनोवेटिव एप्रोच फॉर आर्गेनिक फार्मिंग वैल्यू एडिशन एंड पोस्ट हार्वेस्ट मैनजेमेंट" थीम पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये।

The National Conference & Academic Awards Ceremony titled "Veda's Recognition as a Source of Reference in AYUSH, Modern Medicine, Pharmacopoeia & Diagnostic Methods VRADM-2018" -

26 मई 2018. ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय में गुरूवार से शनिवार तक फैकल्टी ऑफ़ आयर्वेदिक साइंस (नेचुरोपैथी एंड योगिक साइंस), फैकल्टी ऑफ़ होम्योपैथिक साइंस, फैकल्टी ऑफ़ फार्मास्यूटिकल साइंस एवं फैकल्टी ऑफ़ फिजियोथेरपी एंड डायग्नोसिस की सहभागिता में त्रि–दिवसीय (24 मई–26 मई) नेशनल कांफ्रेंस एवं अकादमिक अवार्ड सेरेमनी "वेदाज रिकग्निशन एज सोर्स ऑफ़ रेफरेन्स इन आयुष, मॉडर्न मेडिसिन फार्माकोपीआ एंड डायग्नोसिस मेथड्स वीआरएएमडी –2018" का आयोजन किया गया।24 मई को कांफ्रेंस के पहले दिन प्रमुख वक्ता एवं समीक्षक के रूप में प्रोफेसर डॉ. के. के. पांडेय, डॉ. एम. एस. भागेल फॉर्मर प्रोफेसर एंड डायरेक्टर ऑफ़ आईपीजीटीआर जामनगर, डॉ. कृष्णा खांडल रिटायर्ड प्रोफेसर नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ आयुर्वेदा, डॉ. अजय कुमार शर्मा डीन, फैकल्टी ऑफ़ आयुर्वेद उपस्थित रहे। इस नेशनल कांफ्रेंस का शुभारम्भ विश्वविद्यालय की चेयरपर्सन माननीया जेवीएन विदुषी गर्ग जी ने द्वीप प्रज्वलन कर किया, एवं छात्राओं के द्वारा वन्देमातरम तथा गणेश वंदना के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। 24 मई को कांफ्रेंस के पहले दिन प्रमुख वक्ता एवं समीक्षक के रूप में प्रोफेसर डॉ. के. के. पांडेय, डॉ. एम. एस. भागेल फॉर्मर प्रोफेसर एंड डायरेक्टर ऑफ़ आईपीजीटीआर जामनगर, डॉ. कृष्णा खांडल रिटायर्ड प्रोफेसर नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ आयुर्वेदा, डॉ. अजय कुमार शर्मा डीन, फैकल्टी ऑफ़ आयुर्वेद उपस्थित रहे।

माँ..

बाजुओं में खींच के आ जायेगी जैसे कायनात
अपने बच्चे के लिए ऐसे बाहें फैलाती है माँ..
जिन्दगी के सफर मै गर्दिशों में धुप में
जब कोई साया नहीं मिलता तब बहुत याद आती है माँ..
प्यार कहते हैं किसे, और ममता क्या चीज है,
कोई उन बच्चों से पूछे जिनकी मर जाती है माँ..

–JV'n Meghna

ममता

मुझको हर हाल में देगा उजाला अपना,
चाँद रिश्ते में तो लगता नहीं मामा अपना
मैंने रोते हुए पोंछे थे किसी दिन आँसू
मुद्दतों से माँ ने नहीं धोया दुपट्टा अपना
हम परिन्दों की तरह उड़ के तो जाने से रहे,
इस जन्म में तो न बदलेंगे ठिकाना अपना
धूप से मिल गए हैं पेड़ हमारे घर के,
हम समझते थे,कि काम आएगा बेटा अपना..
सच बता दूँ तो ये बाजार–ए– मुहब्बत गिर जाए,
मैंने जिस दाम में बेचा है ये मलबा अपनाआ
इनाखाने में रहने का ये इनाम मिला,,
एक मुद्दत से नहीं देखा है चेहरा अपना..
तेज आँधी में बदल जाते हैं सारे मंजर
भूल जाते हैं परिन्दे भी ठिकाना अपना..

–JV'n Lavanya

स्वर्ग हैं जिसके चरणों में कुछ तो हैं उनमें खास ।
बिन कहे सब समझती हैं,ऐसी दिव्य शक्ति हैं उनके पास।
एक ही साँस में निबटाती सभी काम, फिर चाहें सुबह हो या हो शाम।
पूरे दिन की भागदौड़ जिसके हाँथ में, एक क्षण भी नहीं जिसके जीवन में आराम।
उफ तक नहीं करती जो,फिर भी सुनती फटक. ार।
सब कुछ छोड़ चली आती हैं, जब उनका बच्चा उन्हें दर्द से पुकारें।
जिसकी संतान मोर्चा लिए हो उनके खिलाफ, फिर भी कर देती हैं माफ।
सबकी खुशिया का ख्याल हैं जिसको, ताक पर रखती हैं सभी अरमान।
नौ माह जिसने गर्भ में रखकर,दिया एक नवजात को जीवनदान।
कुछ तो सोचकर ईश्वर ने, यह भव्य रचना बना. ई।
सलाम हैं ऊपर वाले को, जीसने माँ के अस्तित्व को पहचान दिलाई। –JV'n Muskan

THE HISTORY OF MOTHER'S DAY

While the Mother's Day that we celebrate on the second Sunday in May is a fairly recent development, the basic idea goes back to ancient mythology—to the long ago civilizations of the Greeks and Romans.

The Greeks paid annual homage to Cybele, the mother figure of their gods, and the Romans dedicated an annual spring festival to the mother of their gods.

MOTHERING SUNDAY

In 16th century England a celebration called "Mothering Sunday" was inaugurated—a Sunday set aside for visiting one's mother. The eldest son or daughter would bring a "mothering cake," which would be cut and shared by the entire family. Family reunions were the order of the day, with sons and daughters assuming all household duties and preparing a special dinner in honor of their mother. Sometime during the day the mother would attend special church services with her family.

JULIA WARD HOWE

Here in America, in 1872, Julia Ward Howe, a famous poet and pacifist who fought for abolition and women's rights, suggested that June 2 be set aside to honor mothers in the name of world peace. This happened not long after the bloody Franco-Prussian War after which Howe began to think of a global appeal to women.

The idea died a quick death. Nothing new happened in this department until 1907, when a Miss Anna M. Jarvis, of Philadelphia, took up the banner.

ANNA M. JARVIS

After her mother died in 1905, Miss Anna Jarvis wished to memorialize her life and started campaigning for a national day to honor all mothers.

Her mother, known as "Mother Jarvis," was a young Appalachian homemaker and lifelong activist who had organized "Mother's Work Days" to save the lives of those dying from polluted water. During the Civil War, Mother Jarvis had also organized women's brigades, encouraging women to help without regard for which side their men had chosen. At the time, there were many special days for men, but none for women.

On May 10, 1908, a Mother's Day service was held at a church in Grafton, West Virginia, where Anna's mother had taught. Thus was born the idea that the second Sunday in May be set aside to honor all mothers, dead or alive.

–JV'n Nikita

हर साल हम 'मदर्स डे' मनाते हैं। माँ, मम्मी, माताजी, आई या मामॅ नाम चाहे कितने ही हो पर नामों में छिपा प्यार एक ही है। माँ के आचँल में है, ममता ही ममता। हमारी कोई परेशानी उनसे छिपी नही रहती, ना जाने वो बिना बताए अपने आप कैसे जान जाती है। माँ का नाम लेते ही आंखों मे अलग सी चमक आ जाती है, अपनी बात शुरु करने से पहले मैं उनके बारे मे कहना चाहूंगी कि "उसको नहीं देखा हमने कभी पर उसकी जरुरत क्या होगी, ए माँ तेरी सूरत से अलग भगवान की मूरत क्या होगी'' है ना, मैं सही कह रही हूँ ना। सच, भगवान का दूसरा नाम ही है माँ। हर जगह तो भगवान का जाना सम्भव नहीं हैं इसलिए उसने माँ को बना दिया। बेशक समय कितना ही बदल जाए पर हमारे देश के संस्कार ही ऐसे है कि माँ का प्यार ना कभी बदला है ना कभी बदलेगा। बताने की बाते तो ढेर सी है,पर मैं दो बाते ही बताऊगी। वो ना सिर्फ खुशी खुशी खिलाती बल्कि बालो में हाथ भी फेरती रहती। सच पूछो तो बच्चों को खुश देखकर, बच्चों की खुशी में इतनी खुशी मिलती है, कि शब्दों में बताई नही जा सकती। यह बात माँ बनने के बाद ही जानी। –JV'n Divya

साक्षात्कार

1 मई, 1886 से अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाने की शुरुआत हुई इसको अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस, श्रम दिवस या मई दिवस भी कहते हैं। इस दिवस को मनाने के पीछे उन मजदूर यूनियनों की हड़ताल है जो कि आठ घंटे से ज्यादा काम ना कराने के लिए की गई थीद्य सब जानते हैं कि मजदूर हमारे समाज का वह हिस्सा है जिस पर समस्त आर्थिक उन्नति टिकी हुई हैस वर्तमान समय के मशीनी युग में भी उनकी महत्ता कम नहीं हुई हैस मजदुर दिवस के इस दिन पर ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय के जर्नलिज्म संभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर जेवीएन. रितिका चौधरी ने जयपुर के कुछ मील मजदूरों से उनके अधिकारों और इस दिवस से सम्बंधित जागरूकता के सम्बन्ध में साक्षात्कार किया तो कुछ इस तरह के हालात नजर आये–

जेवीएन.रितिका– क्या आप जानते हैं आज मजदुर दिवस है?

सुमेर सिंह– ज्यादा जानकारी तो नहीं है पर इतना मालूम है कि इस तरह का कोई दिन मनाया जाता है, पर ये नहीं पता था कि आज ही मनाया जाता है।

जेवीएन.रितिका– ये दिवस मजदूरों को उनके मूल अधिकारों की जागरूकता के लिए मनाया जाता है। क्या आपको पता है आपके मूल अधिकार क्या हैं?

सुमेर सिंह– मूल अधिकार तो बस यही होते हैं कि आप जितनी मेहनत करो उतनी आपको मजदूरी मिल जाये। जितनी मजदूरी उतनी तनख्वाह।

जेवीएन.रितिका– एक दिन में कितने घंटे काम करती हैं आप?

भारती– हम सुबह आठ बजे घर से निकलते हैं और शाम के पांच बजे वापस मिल से निकलते हैं। नौ से पांच बजे तक का समय रहता है।

जेवीएन.रितिका–दिन में आराम करने का कोई समय है? और कोई सुविधाएं मिलती है मील मालिक की तरफ से?

भारती– हमारे आने जाने के लिए बस लगवा रखी है। और दिन में १ घंटा खाना खाने के लिए मिलता है और इसके अलावा दिन में दो वक़्त चाय भी मिलती है।

जेवीएन.रितिका– हफ्ते में कितने दिन काम करना होता है?

सुमेर सिंह– हमे महीने में दो दिन छुट्टी मिलती है, वो दो दिन हम अपनी सुविधा अनुसार किसी दिन ले सकते हैं।

जेवीएन.रितिका– आपके अनुसार मजदूरों की सुविधाओं के लिए और कौनसे बदलाव किये जाने की जरुरत है?

सुमेर सिंह– हम ज्यादा पढ़े–लिखे नहीं हैं तो अधिकार वगैरह की किताबी बातें नहीं आती पर अगर कुछ बदलाव किया जाये तो ऐसा है की हम समाज के वो लोग हैं जो सबसे ज्यादा मेहनत करते हैं और सबसे काम कमाते हैं। इससे ये तो समझ आया है कि अच्छी ज़िन्दगी जीने के लिए पढ़ाई करना बहुत ही जरुरी है, ताकि इज़्ज़त के साथ सुविधाएँ भी मिल सके।

भारती– हम जहाँ काम करते हैं वहां छोटे बच्चों को रखने के लिए कोई सुविधाएं नहीं हैं तो उसकी व्यवस्था अगर मिल जाये तो बेहतर है वरना हमे बच्चों को घर छोड़के आना पड़ता है तो पूरा दिन फ़िक्र लगी रहती है।

कुछ इस तरह के सवालात के बाद समझ आया कि वक़्त के साथ स्थितियां बदली तो है, जहाँ पहले जमींदारी शासन के दौरान मजदूरों का शोषण किया जाता था अब वैसे बदतर हालात नहीं हैं और वर्तमान में मजदुर पहले की तुलना में अधिक जागरूक हैं, पर समाज के इस हिस्से में अब भी बहुत बदलावों की जरूरत है ताकि इन्हे इनके मूल अधिकार जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य आदि बिना किसी भेदभाव के साथ मिल सकें और वो एक सुविधाजनक ज़िन्दगी से वंचित ना रहें।

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय के फैकल्टी ऑफ़ एजुकेशन एंड मेथोडोलोजी में तीन दिवसीय नेशनल कांफ्रेंस " ओ.एफ.बी.ए –2018" का आयोजन

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय में यूनिवर्सिटी के हरदेवगोविंद खुराना चेयर के तत्वधान में राजी सहयोग संसथान की सहभागिता में फैकल्टी ऑफ़ एजुकेशन एंड मेथोडोलोजी द्वारा तीन दिवसीय नेशनल कांफ्रेंस एवं अकादमिक अवार्ड सेरेमनी "रीसेंट एडवांसेज इन टीचिंग मेथोडोलोजी एंड एजुकेशन डेवलपमेंट (आर.ए.टी.एम.इ.डी.)–2018" का आयोजन कियागया। इस नेशनल कांफ्रेंस का शुभारम्भ विश्वविद्यालय की चेयरपर्सन माननीया जेवीएन विदुषी गर्ग जी ने द्वीप प्रज्वलन कर किया, एवं छात्राओं के द्वारा वन्देमातरम तथा गणेश वंदना के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। कांफ्रेंस मे प्रमुख वक्ता एवं समीक्षक के रूप में हरदेवगोविंद खुराना चेयर प्रोफेसर अश्विनी कुमार, प्रोफेसर जीतेन्द्र कुमार श्रीवास्तव रजिस्ट्रार ऑफ़ इग्नू दिल्ली , प्रोफेसर जी.विश्वानथप्पा प्रिंसिपल रीजनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ एजुकेशन अजमेर राजस्थान उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम के पहले सत्र में विश्वविद्यालय परिसर के अलग–अलग चार कक्षों मे 'प्रीक्वॉलिफिइंग सेशन' का आयोजन हुआ जिसमे प्रोफेसर जीतेन्द्र कुमार श्रीवास्तव , प्रोफेसर जी. विश्वानथप्पा ,हरदेवगोविंद खुराना चेयर प्रोफेसर अश्विनी कुमार, डॉ. अलका पारीक सुबोध पी.जी कॉलेज तथा डॉ. श्रद्धा चौहान अस्सिस्टेंट प्रोफेसर श्री अग्रसेन पी जी कॉलेज, प्रोफेसर राधा रानी सुरेश ज्ञानविहार कॉलेज ने छात्राओं के शोध पत्रों की समीक्षा करते हुए अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम के प्री–क्वालीफाइंग सेशन में पहले दिन तकरीबन 300 प्रतिभागियों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये। इस अवसर पर विश्विद्यालय के एजुकेशन एंड मेथोडोलोजी विभाग समस्त शिक्षकगण एवं सभी छात्राएं उपस्थित रहे।

CONFERENCE

JAYOTI VIDYAPEETH WOMEN'S UNIVERSITY, JAIPUR

©सर्वाधिकार सुरक्षित

स्वत्वाधिकार, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक डॉ. पंकज गर्ग द्वारा लक्ष्मी ऑफसेट, G–1 मधुवन कॉलोनी टोंक फाटक, जयपुर– 302018 से मुद्रित एवं ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, वेदान्त ज्ञान वैली, ग्राम झरना, महलां जोबनेर लिक रोड जयपुर– अजमेर एक्सप्रेस वे जयपुर– 303122 से प्रकाशित।

घोषणा एवं शर्तें: समस्त विवादों का न्यायक्षेत्र केवल जयपुर होगा। **JAYOTI MUHIM**(ज्योति मुहिम) में प्रकाशित लेखों, चित्रों एवं अन्य सामग्री से सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। कॉपीराइट उल्लंघन की स्थिति में केवल संबंधित लेखक का ही दायित्व होगा।